13 | उपभोक्ता की बचत
(CONSUMER'S SURPLUS)

प्राक्कथन—आधुनिक आर्थिक विश्लेषण में उपभोक्ता की बचत की अवधारणा का महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि इस अवधारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम फ्रांसीसी अर्थशास्त्री ए. जे. डुप्यूमिट (A. J. Dupit) ने सन् 1844 में किया था, किन्तु इस अवधारणा का वैज्ञानिक स्वरूप प्रो. मार्शल ने सन् 1879 में अपने *'Pure Theory of Domestic Value'* में प्रदान किया और इसे **उपभोक्ता का लगान** (Consumer's Rent) नामक शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किया। आगे चलकर इसे **उपभोक्ता की बचत** (Consumer's Surplus) के नाम से पुकारा। अतः मार्शल को ही उपभोक्ता की बचत की अवधारणा का जनक (Father) कहा जा सकता है।

उपभोक्ता की बचत का अर्थ
(MEANING OF CONSUMER'S SURPLUS)

उपभोक्त की बचत की धारणा हमारे दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित है। प्रायः कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि किसी वस्तु के क्रय करने पर हम जितना मूल्य देने के लिये तैयार होते हैं, उससे कम ही मूल्य पर वस्तु प्राप्त हो जाती है। अतः वस्तु के लिये जितना मूल्य हम देने के लिये तैयार रहते हैं और वस्तुतः जितने में वह मिल जाती है, दोनों मूल्यों के अन्तर को ही उपभोक्ता की बचत कहा जाता है। उदाहरण के लिये मान लिया वस्तु x को खरीदने के लिये हम बाजार जाते हैं और उसके लिये 20 रु. देने को तैयार हैं, किन्तु संयोगवश वह वस्तु 15 रु. में ही मिल जाती है, तो (20 रु. − 15 रु. =) 5 रु. की बचत होती है, जिसे हम उपभोक्ता की बचत कहेंगे। इस बचे हुए 5 रु. से अन्य वस्तुओं को खरीदकर अतिरिक्त उपयोगिता प्राप्त की जा सकती है।

प्रो. मार्शल का ऐसा मानना है कि कभी-कभी किसी वस्तु के लिये कम कीमत इसलिये चुकानी पड़ती है कि वह वस्तु बाजार में आसानी से मिल जाती है। बाजार में वस्तु के आसानी से मिल जाने को प्रो. मार्शल ने **विशेष अवसर** (Conjucture) कहा है। इनके अनुसार **"उपभोक्ता की बचत इसी विशेष अवसर की उपज है"** (Consumer's surplus is the produce of conjucture)। कहने का आशय यह है कि जिन वस्तुओं के लिये हम अधिक कीमत चुका सकते हैं, वे वस्तुएँ आर्थिक एवं तकनीकी विकास के कारण हमें कम कीमत पर ही प्राप्त हो जाती हैं। वर्तमान समय में उपभोक्ताओं को कम कीमत पर ही अधिक सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं। उदाहरणतः पहले लम्बी यात्रा तय करने के लिये हमें अधिक व्यय करना पड़ता था तथा समय भी अधिक लगता था, किन्तु वर्तमान समय में कम खर्च तथा अल्प अवधि में ही उस लम्बी यात्रा को तय कर लेते हैं। दैनिक जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे जब हम किसी वस्तु के लिये अधिक कीमत चुकाने को तैयार होते हैं, किन्तु किसी परिस्थिति या वातावरण या तकनीकी विकास के कारण वह वस्तु हमें कम ही कीमत पर मिल जाती है। अतः हम कह सकते हैं कि उपभोक्ता की बचत वह लाभ है जो किसी उपभोक्ता को स्थिति एवं वातावरण द्वारा प्रदान की गयी सुविधाओं तथा अवसरों के द्वारा प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार, "उपभोक्ता की बचत 'अवसरों', 'वातावरणों' तथा 'स्थितियों' की उपज है।" "Consumer's surplus is the product of opportunities, conjuctures and environments."

उपभोक्ता की बचत की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF CONSUMER'S SURPLUS)

उपभोक्ता की बचत की अवधारणा की परिभाषा विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने दी हैं। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

1. प्रो. मार्शल के अनुसार, "किसी वस्तु के प्रयोग से वंचित रहने की अपेक्षा उपभोक्ता जो कीमत देने को तत्पर रहता है तथा जो कीमत वह वास्तव में देता है, उसका अन्तर ही सन्तोष (उपयोगिता) की बचत की आर्थिक माप है। इसे उपभोक्ता की बचत कहा जाता है।"

"The excess of price which he (consumer) would be willing to pay rather than go without the thing over that which he actually does pay, is the economic measure of this surplus satisfaction. It may be called consumer's surplus" —*Marshall*

2. पेन्सन के अनुसार, "जो मूल्य हम देने को तैयार रहते हैं और वास्तव में जो मूल्य हमें चुकाना पड़ता है, उसके अन्तर को उपभोक्ता की बचत कहते हैं।"

"The difference between what we would pay and what we have to pay is called consumer's surplus." —*Penson*

3. प्रो. जे. के. मेहता के अनुसार, "एक व्यक्ति को किसी वस्तु के उपभोग से प्राप्त उपभोक्ता की बचत उस वस्तु के प्रयोग से प्राप्त उपयोगिता (संतोष) और उसको प्राप्त करने हेतु त्याग की जाने वाली उपयोगिता (सन्तोष) के अन्तर के बराबर होती है।"

"Consumer's surplus obtained by a person from a commodity is the difference between the satisfaction which he derives from it and which he for goes in order to procure that commodity." —*J. K. Mehta*

4. सैम्युअलसन के अनुसार, "कुल कल्याण तथा कुल आर्थिक लाभ में हमेशा एक अन्तर होता है। यह अन्तर एक प्रकार की बचत है जो उपभोक्ता को इसलिये प्राप्त होती है कि वह सदा ही उससे अधिक प्राप्त करता है जितना कि उसके द्वारा भुगतान किया जाता है।"

"There is always a gap between total welfare and total economic value. This gap is the nature of a surplus which consumer gets because he always receive more than he pays." —*Samuelson*

नियम की व्याख्या
(EXPLANATION OF THE LAW)

उपभोक्ता की बचत की अवधारणा को एक उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया एक उपभोक्ता 6 कलम खरीदता है तथा बाजार में प्रत्येक कलम की कीमत 2 रु. है। उपयोगिता ह्रास नियम के अनुसार जैसे-जैसे उपभोक्ता कलम की इकाइयाँ बढ़ाता जायेगा, कलम की उत्तरोत्तर इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता घटती चली जायेगी। अतः कलम की आरम्भ की इकाइयों के लिये उपभोक्ता अधिक कीमत देने के लिये तैयार होगा क्योंकि उनसे उसको बाद की इकाइयों से अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। बाद की इकाइयों की तुलना में पूर्व की इकाइयों से उपभोक्ता को जो बचत प्राप्त होगी, उसे उपभोक्ता की बचत कहेंगे। उपरोक्त बातों को अग्र तालिका से भी स्पष्ट किया जा सकता है :

Scanned with CamScanner

तालिका

कलम की इकाइयाँ	प्राप्त उपयोगिता (रु. में)	बाजार में कीमत (रु. में)	उपभोक्ता की बचत (रु. में)
1	12	2	12 – 2 = 10
2	10	2	10 – 2 = 8
3	8	2	8 – 2 = 6
4	6	2	6 – 2 = 4
5	4	2	4 – 2 = 2
6	2	2	2 – 2 = 0
	कुल = 42 रु.	कुल कीमत =2 × 6 = 12 रु.	कुल बचत = 30 रु.

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कलम की पहली इकाई से 12 रु. के बराबर उपयोगिता मिलती है, जबकि बाजार में कलम मात्र 2 रु. में ही प्राप्त होती है। अतः कलम की पहली इकाई से उपभोक्ता को (12 – 2 =) 10 रु. के बराबर बचत प्राप्त होती है। इसी प्रकार दूसरी इकाई से 8 रु., तीसरी इकाई से 6 रु., चौथी इकाई से 4 रु., पाँचवीं इकाई से 2 रु. तथा छठीं इकाई से कोई बचत प्राप्त नहीं होती है। इस प्रकार कलम की कुल छः इकाइयों से उपभोक्ता को कुल 30 रु. (10 + 8 + 6 + 4 + 2 + 0) बचत प्राप्त होती है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण (Diagrammatic Presentation)

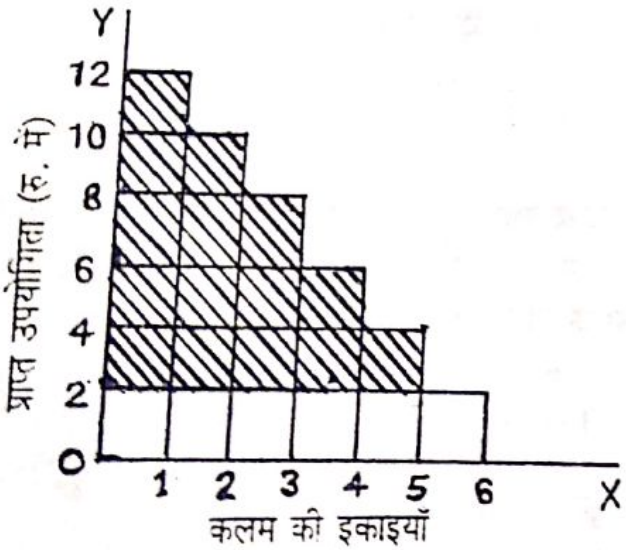

चित्र 1

संलग्न चित्र में OX-अक्ष पर कलम की इकाइयाँ तथा OY-अक्ष पर प्राप्त उपयोगिता को दिखाया गया है। चित्र में रेखांकित भाग उपभोक्ता की बचत को स्पष्ट करता है तथा सादा भाग कलम की प्रति इकाई बाजार मूल्य को स्पष्ट करता है। चित्र से स्पष्ट है कि प्रथम कलम से उपभोक्ता को सर्वाधिक उपयोगिता प्राप्त होती है, अतः रेखांकित भाग (उपभोक्ता की बचत का संकेत) सर्वाधिक है। कलम की उत्तरोत्तर इकाइयों से उपयोगिता घटती गयी है, अतः रेखांकित भाग का क्षेत्र भी घटता गया है।

उपभोक्ता की बचत की मान्यताएँ
(ASSUMPTIONS OF CONSUMER'S SURPLUS)

प्रो. मार्शल ने उपभोक्ता की बचत की व्याख्या निम्नलिखित मान्यताओं के आधार पर की है :

(i) उपयोगिता को मुद्रा में मापा जा सकता है। (ii) प्रत्येक वस्तु एक स्वतन्त्र वस्तु है। (iii) मुद्रा की उपयोगिता अपरिवर्तित रहती है। (iv) वस्तु की कोई स्थानापन्न वस्तु नहीं है। (v) उपभोक्ता की रुचि, आय तथा फैशन आदि अपरिवर्तित रहते हैं। (vi) वस्तु की उपयोगिता उसकी पूर्ति पर निर्भर करती है।

Scanned with CamScanner